प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2022-23
Sample Paper - 1
विषय हिंदी (आधार)
(विषय कोड -302)
कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय -3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य और आवश्यक निर्देश-
- इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं- खंड 'अ' और 'ब'। कुल प्रश्न 13 हैं।
- खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं ।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

ओ देशवासियों, बैठ न जाओ पत्थर से,
ओ देशवासियों, रोओ मत तुम यों निर्झर से,
दरख्वास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से
वह सुनता है
गमजदों और
रंजीदों की।
जब सारा सरकता-सा लगता जग जीवन-से
अभिषिक्त करें, आओ, अपने को इस प्रण से-
हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से
दुनिया ऊँचे
आदर्शों की,
उम्मीदों की
साधना एक युग-युग अंतर में ठनी रहे
यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे;
प्रार्थना एक युग-युग पृथ्वी पर बनी रहे यह जाति
योगियों, संतों
और शहीदों की।

(i) कवि देशवासियों को क्या कहना चाहता है?

क) पढ़ो, लिखो, कुछ करो। ख) निराशा और जड़ता छोड़ो।

ग) जागो, आगे बढ़ो। घ) डरो मत, ऊँचे चढ़ो।

(ii) कवि किसकी और किससे प्रार्थना की बात कर रहा है?

क) देशवासी और सरकार ख) भगवान और जनता

ग) युवा वर्ग और ब्रिटिश सत्ता घ) दुःखी लोग और ईश्वर

(iii) कवि भारतीयों को कौन-सा संकल्प लेने को कहता है?

क) हम भारत को कभी न मिटने देंगे।
ख) जीवन में सार-तत्त्व को बनाए रखेंगे।
ग) जग-जीवन को समरसता से अभिषिक्त करेंगे।
घ) उच्च आदर्श और आशा के महत्त्व को बनाए रखेंगे।

(iv) **यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे** -का भाव है-

क) यह धरती बुद्ध और बापू जैसी है।
ख) इस भूमि पर बुद्ध और बापू जैसे लोग जन्म लेते रहें।
ग) इस भूमि पर बुद्ध और बापू ने जन्म लिया।
घ) यह धरती बुद्ध और बापू को हमेशा याद रखेगी।

(v) कवि क्या प्रार्थना करता है?

क) धरती माँ का वंदन करते हैं।
ख) भारतीयों में योगी, संत और शहीद अवतार लेते रहें।
ग) योगी, संत और शहीदों का हम सब सम्मान करें।
घ) युगों-युगों तक यह धरती बनी रहे।

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: [5]

बहती रहने दो मेरी धमनियों में
जन्मदात्री मिट्टी की गंध,
मानवीय संवेदनाओं की पावनी गंगा,
सदा-सदा को वांछित रह सकने वाले
पसीने की खारी यमुना।
शपथ खाने दो मुझे
केवल उस मिट्टी की
जो मेरे प्राणों का आदि है,
मध्य है, अन्त है।
सिर झुकाओ मेरा
केवल उस स्वतंत्र वायु के सम्मुख
जो विश्व का गरल पीकर भी
बहता है
पवित्र करने को कण-कण।
क्योंकि
मैं जी सकता हूँ
केवल उस मिट्टी के लिए,

केवल इस वायु के लिए।
क्योंकि
मैं मात्र साँस लेती
खाल होना नहीं चाहता।

(i) **जन्मदात्री मिट्टी की गंध** पंक्ति में कवि की अंभिव्यक्त इच्छा का स्वरूप है

क) मातृभूमि के प्रति गहन अनुराग
ख) वर्षा से भीगी मिट्टी की गंध
ग) अन्न उपजाने वाल् मिट्टी की महक
घ) जन्म देने वाली माँ के प्यार की लालसा

(ii) **मानवीय संवेदनाओं की पावनी गंगा** से कवि का आशय है-

क) आपद्रस्त देशवासियों के प्रति सहानुभूति
ख) देशवासियों के सुख-दुःख की सहज अनुभूति
ग) मानवता के कल्याण हेतु गहन प्रेरणा
घ) पीड़ित मानवता के उद्धार की अभिलाषा

(iii) कवि शपथ लेना चाहता है देश की उस मिट्टी की, जो उसके

क) जीवन की सर्वस्व है
ख) जीवन को बनाने वाली है
ग) रग-रग में व्याप्त है
घ) प्राणों का आधार है

(iv) **मात्र साँस लेती खाल** का आशय है

क) दिशाहीन जीवन
ख) निष्प्राण जीवन
ग) पुरुषार्थहीन जीवन
घ) निरुद्दश्ेय जीवन

(v) **पवित्र करने को कण-कण** में अलंकार है

क) श्लेष
ख) उपमा
ग) यमक
घ) अनुप्रास

2. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[10]**

कैसी विडंबना है कि उन्नीसवीं शताब्दी में जब अंग्रेजी 'ओरिएंटलिस्ट' कादम्बरी, कथा-सरित्सागर, पंचतन्त्र जैसी भारतीय कथाओं के पीछे पागल थे, स्वयं भारतीय लेखक 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' लिखने के लिए व्याकुल थे। ये हैं उपनिवेशवाद के दो चेहरे! निस्सन्देह कुछ लोग अपनी भाषा में 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' लिखने में कुछ-कुछ कामयाब भी हो गए। उदाहरण के लिए लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षागुरु' (1882), जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी में अंग्रेजी ढंग का पहला उपन्यास' माना। लेकिन पूरा-पूरा 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' सबसे न बन पड़ा। खासतौर से उनसे जो सर्जनशील रचनाकार थे; जैसे हिन्दी से ही उदाहरण लें तो ठाकुर जगमोहन सिंह, जिनकी कथाकृति

'श्यामास्वप्न' किसी भी तरह 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' नहीं है। ऐसे सर्जनशील रचनाकारों के सिरमौर हैं बंकिमचन्द्र, जिन्हें प्रथम भारतीय उपन्यासकार होने का गौरव प्राप्त है। छब्बीस वर्ष की कच्ची उम्र में बंकिमचन्द्र ने 'दुर्गेशनन्दिनी' (1865) नाम का अपना पहला बंगला उपन्यास प्रकाशित किया और एक साल के बाद 'कपालकुंडला' (1866) ; फिर तीन साल के अंतराल के बाद 'मृणालिनी' (1869)। इनमें से एक भी 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' नहीं है। जगमोहन सिंह के 'श्यामास्वप्न' के समान ही ये तीनों उपन्यास किसी 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' की अपेक्षा संस्कृत की 'कादम्बरी' की याद दिलाते हैं। यह भी एक विडंबना ही है। एक लेखक कथा की पुरानी परम्परा से मुक्त होकर एकदम आधुनिक ढंग की नई कथाकृति रचना चाहता है और परम्परा है कि उसके सर्जनात्मक अवचेतन का संचालन कर रही है। कंबल बाबाजी को कैसे छोड़े! इस तरह बंकिमचन्द्र की रचना प्रक्रिया से गुजरकर जो चीज निकली उसके लिए सही नाम एक ही है - रोमांस!
उपन्यास का अर्थ जिनके लिए 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' है - फिर उसकी परिभाषा जो भी हो, वे इसे बंकिमचन्द्र की विफलता मानेंगे लेकिन मेरी दृष्टि से लेखक की इस विफलता में ही भारतीय उपन्यास की सार्थकता निहित है। भारतीय उपन्यास के मूलाधार उन्नीसवीं शताब्दी के ये 'रोमांस' ही हैं, न कि तथाकथित अंग्रेजी ढंग के उपन्यास! उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय मानस का सही प्रतिनिधित्व 'कपालकुंडला' करती है, 'परीक्षागुरु' नहीं। 'परीखागुरु' का महत्व अधिक से अधिक ऐतिहासिक है और वह भी सिर्फ हिन्दी के लिए! जब कि 'कपालकुंडला' अपने जमाने की अत्याधिक लोकप्रिय कृति होने के साथ ही स्थायी कीर्ति की हकदार है। तथाकथित 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' का तिरस्कार करके ही बंकिमचन्द्र के रोमांसधर्मी उपन्यासों ने भारतीय राष्ट्र के भारतीय उपन्यास की अपनी पहचान बनाने में पहल की।
अंग्रेजी ढंग के 'नावेल' का तिरस्कार वस्तुत: उपनिवेशवाद का तिरस्कार है। भारत से पहले अंग्रेजी ढंग के 'नावेल' को उत्तरी अमेरिका अस्वीकार ढंग के 'नावेल' का अनुकरण नहीं किया। 'स्कार्लेट लेटर' और 'मोबी डिक' ऐसे रोमांस' हैं जिन्हें 'राष्ट्रीय रूपक' के रूप में आज भी ग्रहण किया जाता है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद से अपने आपको मुक्त कर अमेरिकी प्रतिभा ने आख्यान ने रूपबन्ध में भी स्वतन्त्रता प्राप्त की। इस प्रकार उत्तरी अमेरिका में राष्ट्र और उपन्यास का जन्म साथ-साथ हुआ। तब तक के अंग्रेजी 'नावेल' के रूपबन्ध में एक स्वतन्त्र राष्ट्र की उद्दाम आकांक्षाओं का अँटना संभव न था। नए राष्ट्र के एक नितांत नए उन्मुक्त रुपबन्ध का सृजन किया।

(i) कपालकुंडला किसके प्रतिनिधि के रूप में है?

i. अंग्रेजी नॉवेल

ii. बांग्ला उपन्यास

iii. भारतीय मानस

iv. रोमांटिक उपन्यास

(ii) भारतीय उपन्यास का मूलाधार क्या है?

i. अंग्रेजी ढंग का नॉवेल

ii. परीक्षा गुरु

iii. कादंबरी

iv. बंकिमचंद्र के उपन्यास

(iii) बंकिमचंद्र का पहला उपन्यास कौन था?

i. दुर्गेशनंदिनी

ii. कपालकुंडला

iii. मृणालिनी

iv. श्यामास्वप्न

(iv) हिन्दी में अंग्रेजी ढंग का पहला उपन्यास किसे माना गया?

i. मृणालिनी

ii. परीक्षागुरु

iii. कादंबरी

iv. श्यामस्वप्न

(v) प्रस्तुत उपन्यास किस विषय पर आधारित है?

i. उपनिवेशवाद

ii. रोमांस

iii. कहानी

iv. उपन्यास

(vi) बंकिमचंद्र की आरंभिक रचनाओं का केंद्र क्या था?

i. अंग्रेजी नॉवेल

ii. सृजन

iii. रोमांस

iv. उपनिवेशवाद

(vii) **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-**

I. बंकिमचंद्र की रचना प्रक्रिया से गुजरने पर रोमांस उसके निष्कर्ष के रूप में सामने आता है।

II. भारतीय उपन्यासों के आधार अंग्रेजी ढंग के उपन्यास हैं।

III. अंग्रेजी ढंग के उपन्यासों का तिरस्कार उपनिवेशवाद का तिरस्कार है।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

i. I और II

ii. II और III

iii. I और III

iv. केवल III

(viii) निम्न में से किसको आज भी राष्ट्रीय रूपक के रूप में माना जाता है?

i. मोबी डिक

ii. कादंबरी

iii. पंचतंत्र

iv. कपालकुंडला

(ix) उन्नीसवी शताब्दी में अंग्रेज किन भारतीयों कथाओं के पीछे पागल नहीं थे?

i. कादंबरी

ii. उपन्यास

iii. मृणालिनी

iv. पंचतंत्र

(x) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A): अमेरिकी प्रतिभा अपने आप को अंग्रेजी साम्राज्यवाद से मुक्त नहीं कर पाई।
कारण (R): उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय मानस का सही प्रतिनिधित्व 'परीक्षागुरु' करता है।

i. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

ii. कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

iii. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

iv. कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

3. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

सोचिए
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है कैसा
यानी कैसा लगता है
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)
सोचिए
बताइए
थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे?)
आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे
इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का करते हैं?

(i) अपाहिज व्यक्ति को बार-बार अपना दुःख बताने के लिए मजबूर करने के पीछे दूरदर्शन वालों का क्या उद्देश्य हो सकता है?

क) अपाहिज की स्थिति में सुधार हेतु प्रयास करना	ख) अपाहिज के प्रति संवेदनशीलता होना
ग) अपने कार्यक्रम को व्यावसायिक रूप से सफल बनाना	घ) सभी विकल्प सही हैं

(ii) किसी के दुःख का प्रदर्शन करके कार्यक्रम को रोचक बनाना क्या है?

क) समय की माँग	ख) दुःख की अभिव्यक्ति
ग) मानवता के विरुद्ध	घ) अनिंदनीय कार्य

(iii) **हम पूछ-पूछकर रुला देंग** पंक्ति में कौन-सा भाव निहित है?

क) क्रूरता का	ख) सामाजिक न्याय का
ग) दुःख एवं संवेदनशीलता का	घ) मानवीय करुणा का

(iv) **यह अवसर खो देंगे** पंक्ति में किस अवसर के खोने की बात की जा रही है?

क) सामाजिक न्याय का	ख) दुःख एवं संवेदनशीलता का
ग) मानवीय करुणा का	घ) क्रूरता का

(v) **यह अवसर खो देंगे** पंक्ति में किस अवसर के खोने की बात की जा रही है?

i. अपंगता को दर्शाने और बताने का अवसर
ii. बात को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने का अवसर
iii. कैमरे के सामने आने का अवसर
iv. धन कमाने का अवसर

क) विकल्प (i)	ख) विकल्प (iv)
ग) विकल्प (ii)	घ) विकल्प (iii)

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- **[5]**

(i) टेलीफ़ोन, इंटरनेट, फ़ैक्स, समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा आदि विभिन्न माध्यम हैं-

क) संचार के	ख) संचार और जनसंचार के
ग) इनमें से किसी के नहीं	घ) जनसंचार के

(ii) रिसर्च का काम किसकी वजह से और आसान हो गया है?

क) इंटरनेट　　　　ख) जनसंचार माध्यम

ग) टेलीविजन　　　　घ) पत्रकारिता

(iii) पत्रकारीय लेखन में सर्वाधिक महत्त्व किस बात का है?

क) लोगों को विश्वास में लाने का　　　　ख) दिखावा करने का

ग) सभी　　　　घ) समसामयिक घटनाओं की जानकारी

(iv) समाचार संगठन में काम करने वाले नियमित वेतनभोगी पत्रकार को क्या कहते हैं?

क) फ्री लांसर　　　　ख) अल्पकालिक

ग) पूर्णकालिक　　　　घ) अंशकालिक

(v) विशेष लेखन पद्धति कहाँ प्रचलित है?

क) शोध प्रबंध　　　　ख) जनकल्याण संबंधी लेखन

ग) जनसंचार के माध्यमों में　　　　घ) शैक्षिकलेखन

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेत् निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए- **[10]**

(i) यशोधर बाबू का परिवार किस संस्कृति में ढलने में सफल रहा?

क) जापानी　　　　ख) पश्चिमी

ग) चीनी　　　　घ) भारतीय

(ii) यशोधर बाबू का दफ्तर कितने बजे बंद होता था?

क) चार　　　　ख) आठ

ग) सात　　　　घ) पाँच

(iii) यशोधर बाबू को अपनी सिल्वर वेडिंग की पार्टी अच्छी क्यों नहीं लगी?

क) क्योंकि ये उनके मित्रों से रखी थी।　　　　ख) क्योंकि उन्हें इसकी जानकारी नहीं थी।

ग) क्योकि वो उनके बेटे ने दी थी।　　　　घ) क्योंकि ये उनकी पत्नी ने दी थी।

(iv) **सिल्वर वेडिंग** का क्या अर्थ है?

क) शादी की स्वर्ण जयंती　　　　ख) शादी की रजत जयंती

ग) शादी के चालीस वर्ष　　　　घ) शादी के पचास वर्ष

(v) **जूझ** पाठ के आधार पर लेखक को मराठी कौन पढ़ाते थे?

क) रणनवरे　　　　ख) दादा

ग) इनमे से कोई नहीं　　　　घ) सौंदलगेलर

(vi) **जूझ** पाठ के अनुसार लेखक खेतों में अकेला क्यूँ रहना चाहता था?

क) कविता गाने के लिए　　　　ख) पशु चराने के लिए

ग) पानी देने के लिए　　　　घ) गणित पढ़ने के लिए

(vii) **जूझ** पाठ के अनुसार गाँव के अन्य किसान ईख को ज्यादा दिन खेतों में क्यों रहने देना चाहते थे?

क) गुड़ का स्वाद बढ़ जाता　　　　ख) इनमें से कोई नहीं

ग) गुड़ का दाम बढ़ जाता है　　　　घ) गुड़ ज्यादा निकलता है

(viii) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर दाढ़ी वाली मूर्ति का नाम क्या रखा गया है?

क) याजक नरेश　　　　ख) धर्म नरेश

ग) मुख्य नरेश　　　　घ) गौण नरेश

(ix) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर लेखक ने वर्तमान सेक्टर मार्का कॉलोनियों के रहन-सहन को नीरस बताया है, क्योंकि-

क) वहाँ के लोगों में अपनत्व का अभाव है　　　　ख) उनकी सड़कें बहुत कम चौड़ी और टेड़ी-मेढ़ी हैं

ग) वे शहर के खुद विकसने का अवकाश नहीं छोड़ती　　　　घ) वे ग्रिड प्लान पर आधारित नहीं हैं

(x) **अतीत में दबे पाँव** पाठ में लेखक के अनुसार मुअनजो-दड़ो की आबादी लगभग कितनी थी?

क) 50 हजार　　　　ख) 95 हजार

ग) 85 हजार　　　　घ) 65 हजार

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

इसी प्रकार स्वतंत्रता पर भी क्या कोई आपत्ति हो सकती है? गमनागमन की स्वाधीनता, जीवन तथा शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता के अर्थों में शायद ही कोई 'स्वतंत्रता' का विरोध करे। इसी प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। तो फिर मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं प्रदान की जाए?

जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के

लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानून पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

(i) दासता में कौन-सी अवधारणा सम्मिलित नहीं है?

क) कानूनी पराधीनता का होना
ख) इच्छा के विरुद्ध कार्य करना
ग) दूसरों के द्वारा निश्चित कार्य करना
घ) स्वाधीनता के साथ जीना

(ii) मनुष्य के प्रभावशाली प्रयोग से लेखक का क्या तात्पर्य है?

क) उसे अपनी इच्छा से जाति के चयन का अधिकार मिले
ख) उसे शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति का अधिकार दिया जाए
ग) उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए
घ) उसे शारीरिक स्वतंत्रता प्रदान की जाए

(iii) जाति-प्रथा के पोषक यदि मनुष्य के लक्षण एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता दें, तब इसका क्या परिणाम होगा?

क) दासता को बढ़ावा मिलेगा
ख) कानूनी-पराधीनता बढ़ जाएगी
ग) स्वतंत्रता को बढ़ावा मिलेगा
घ) लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे

(iv) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A): इसी प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती।
कारण (R): मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं प्रदान की जाए?

क) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
ग) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

i. संपत्ति के अधिकार में स्वतंत्रता पर आपत्ति हो सकती है।

ii. स्वतंत्रता का अर्थ है दासता में जकड़ना।

iii. सभी लोग अपनी इच्छा के अनुसार ही पेशा अपनाते हैं।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

क) केवल ii ख) केवल iii

ग) केवल i घ) इनमें से कोई नहीं

खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[6]**

(i) कहानी की परिभाषा स्पष्ट कीजिए।

(ii) **भारत में इंटरनेट पत्रकारिता** पर प्रकाश डालें ।

(iii) "बीट " को परिभाषित करें।

8. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लेख लिखिये: **[6]**

(i) **महानगरों में आवास-समस्या** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

(ii) **शिक्षा और व्यवसाय** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

(iii) **बेरोजगारी का दानव** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

(iv) **मोबाइल फोन बिना सब सूना** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[8]**

(i) गाँवों में फैलता फैशन विषय पर एक आलेख लिखिए।

(ii) **स्वच्छता अभियान** पर एक फीचर लिखिए।

(iii) वन रहेंगे : हम रहेंगे पर एक फीचर तैयार कीजिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[6]**

(i) **हरिवंश राय बच्चन** कवि अपने मन का गान किस प्रकार गाता है?

(ii) **उड़ने और खिलने** का कविता से क्या संबंध बनता है? कविता के बहाने के आधार पर बताइए।

(iii) व्याख्या करें - ऊँचे नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[4]**

(i) फिराक की रुबाई में भाषा के विलक्षण प्रयोग किए गए है- स्पष्ट करें।

(ii) पतंग कविता का मूल भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

(iii) उषा कविता में कवि ने किस जादू के टूटने का वर्णन किया है?

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[6]**

(i) **भक्तिन** पाठ के अनुसार बेटों की माँ और बेटियों की माँ के प्रति परिवार के व्यवहार में क्या अंतर था?

(ii) लेखक **धर्मवीर भारती** अपनी बुद्धि के अनुसार किस बात को मानने से मना करता है?

(iii) रात्रि के समय गाँव के वातावरण का वर्णन कीजिए, जिसका विवरण **पहलवान की ढोलक** कहानी में दिया गया है।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[4]**

(i) बाजार को सार्थकता देने का क्या आशय है? यह कौन कर सकता है?

(ii) बाज़ार जाते समय आपको किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? **बाज़ार दर्शन** पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(iii) आशय स्पष्ट कीजिए- फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है। वह इशारा है।

SOLUTION

खंड अ (वस्तपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

ओ देशवासियों, बैठ न जाओ पत्थर से,
ओ देशवासियों, रोओ मत तुम यों निर्झर से,
दरख्वास्त करें, आओ, कुछ अपने ईश्वर से
वह सुनता है
गमजदों और
रंजीदों की।
जब सारा सरकता-सा लगता जग जीवन-से
अभिषिक्त करें, आओ, अपने को इस प्रण से-
हम कभी न मिटने देंगे भारत के मन से
दुनिया ऊँचे
आदर्शों की,
उम्मीदों की
साधना एक युग-युग अंतर में ठनी रहे
यह भूमि बुद्ध-बापू से सुत की जनी रहे;
प्रार्थना एक युग-युग पृथ्वी पर बनी रहे यह जाति
योगियों, संतों
और शहीदों की।

(i) **(ख)** निराशा और जड़ता छोड़ो।
व्याख्या: निराशा और जड़ता छोड़ो।

(ii) **(घ)** दुःखी लोग और ईश्वर
व्याख्या: दुःखी लोग और ईश्वर

(iii) **(घ)** उच्च आदर्श और आशा के महत्त्व को बनाए रखेंगे।
व्याख्या: उच्च आदर्श और आशा के महत्त्व को बनाए रखेंगे।

(iv) **(ख)** इस भूमि पर बुद्ध और बापू जैसे लोग जन्म लेते रहें।
व्याख्या: इस भूमि पर बुद्ध और बापू जैसे लोग जन्म लेते रहें।

(v) **(ख)** भारतीयों में योगी, संत और शहीद अवतार लेते रहें।
व्याख्या: भारतीयों में योगी, संत और शहीद अवतार लेते रहें।

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

बहती रहने दो मेरी धमनियों में
जन्मदात्री मिट्टी की गंध,
मानवीय संवेदनाओं की पावनी गंगा,
सदा-सदा को वांछित रह सकने वाले
पसीने की खारी यमुना।

शपथ खाने दो मुझे
केवल उस मिट्टी की
जो मेरे प्राणों का आदि है,
मध्य है, अन्त है।
सिर झुकाओ मेरा
केवल उस स्वतंत्र वायु के सम्मुख
जो विश्व का गरल पीकर भी
बहता है
पवित्र करने को कण-कण।
क्योंकि
मैं जी सकता हूँ
केवल उस मिट्टी के लिए,
केवल इस वायु के लिए।
क्योंकि
मैं मात्र साँस लेती
खाल होना नहीं चाहता।

(i) **(क)** मातृभूमि के प्रति गहन अनुराग
व्याख्या: 'जन्मदात्री मिट्टी की गंध' पंक्ति में कवि ने अपनी मातृभूमि के प्रति गहन अनुराग की भावना अभिव्यक्त की है।

(ii) **(ख)** देशवासियों के सुख-दुःख की सहज अनुभूति
व्याख्या: मानवीय संवेदनाओं की पावनी गंगा से कवि का आशय देशवासियों के सुख-दुःख की सहज अनुभूति से है। कवि इन्हें करीब से अनुभव करना चाहता है।

(iii) **(घ)** प्राणों का आधार है
व्याख्या: कवि के अनुसार, देश की मिट्टी उसके प्राणों का आदि है, मध्य है, अंत है अर्थात् यही उसके जीवन का आधार है।

(iv) **(ख)** निष्प्राण जीवन
व्याख्या: 'मात्र साँस लेती खाल' का आशय निष्प्राण जीवन से है। कवि कहता है कि वह ऐसा जीवन नहीं जीना चाहता जो निर्जीव अथवा प्राणहीन हो।

(v) **(घ)** अनुप्रास
व्याख्या: प्रस्तुत पंक्ति में 'क' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

2. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

कैसी विडंबना है कि उन्नीसवीं शताब्दी में जब अंग्रेजी 'ओरिएंटलिस्ट' कादम्बरी, कथा-सरित्सागर, पंचतन्त्र जैसी भारतीय कथाओं के पीछे पागल थे, स्वयं भारतीय लेखक 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' लिखने के लिए व्याकुल थे। ये हैं उपनिवेशवाद के दो चेहरे!

निस्सन्देह कुछ लोग अपनी भाषा में 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' लिखने में कुछ-कुछ कामयाब भी हो गए। उदाहरण के लिए लाला श्रीनिवास दास का 'परीक्षागुरु' (1882), जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी में अंग्रेजी ढंग का पहला उपन्यास' माना। लेकिन पूरा-पूरा 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' सबसे न बन पड़ा। खासतौर से उनसे जो सर्जनशील रचनाकार थे; जैसे हिन्दी से ही उदाहरण लें तो ठाकुर जगमोहन सिंह, जिनकी कथाकृति 'श्यामास्वप्न' किसी भी तरह 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' नहीं है। ऐसे सर्जनशील रचनाकारों के सिरमौर हैं बंकिमचन्द्र, जिन्हें प्रथम

भारतीय उपन्यासकार होने का गौरव प्राप्त है।

छब्बीस वर्ष की कच्ची उम्र में बंकिमचन्द्र ने 'दुर्गेशनन्दिनी' (1865) नाम का अपना पहला बंगला उपन्यास प्रकाशित किया और एक साल के बाद 'कपालकुंडला' (1866) ; फिर तीन साल के अंतराल के बाद 'मृणालिनी' (1869)। इनमें से एक भी 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' नहीं है। जगमोहन सिंह के 'श्यामास्वप्न' के समान ही ये तीनों उपन्यास किसी 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' की अपेक्षा संस्कृत की 'कादम्बरी' की याद दिलाते हैं। यह भी एक विडंबना ही है। एक लेखक कथा की पुरानी परम्परा से मुक्त होकर एकदम आधुनिक ढंग की नई कथाकृति रचना चाहता है और परम्परा है कि उसके सर्जनात्मक अवचेतन का संचालन कर रही है। कंबल बाबाजी को कैसे छोड़े! इस तरह बंकिमचन्द्र की रचना प्रक्रिया से गुजरकर जो चीज निकली उसके लिए सही नाम एक ही है - रोमांस!

उपन्यास का अर्थ जिनके लिए 'अंग्रेजी ढंग का नावेल' है - फिर उसकी परिभाषा जो भी हो, वे इसे बंकिमचन्द्र की विफलता मानेंगे लेकिन मेरी दृष्टि से लेखक की इस विफलता में ही भारतीय उपन्यास की सार्थकता निहित है। भारतीय उपन्यास के मूलाधार उन्नीसवीं शताब्दी के ये 'रोमांस' ही हैं, न कि तथाकथित अंग्रेजी ढंग के उपन्यास! उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय मानस का सही प्रतिनिधित्व 'कपालकुंडला' करती है, 'परीक्षागुरु' नहीं। 'परीखागुरु' का महत्व अधिक से अधिक ऐतिहासिक है और वह भी सिर्फ हिन्दी के लिए! जब कि 'कपालकुंडला' अपने जमाने की अत्याधिक लोकप्रिय कृति होने के साथ ही स्थायी कीर्ति की हकदार है। तथाकथित 'अंग्रेजी ढंग के नावेल' का तिरस्कार करके ही बंकिमचन्द्र के रोमांसधर्मी उपन्यासों ने भारतीय राष्ट्र के भारतीय उपन्यास की अपनी पहचान बनाने में पहल की।

अंग्रेजी ढंग के 'नावेल' का तिरस्कार वस्तुत: उपनिवेशवाद का तिरस्कार है। भारत से पहले अंग्रेजी ढंग के 'नावेल' को उत्तरी अमेरिका अस्वीकार ढंग के 'नावेल' का अनुकरण नहीं किया। 'स्कार्लेट लेटर' और 'मोबी डिक' ऐसे रोमांस' हैं जिन्हें 'राष्ट्रीय रूपक' के रूप में आज भी ग्रहण किया जाता है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद से अपने आपको मुक्त कर अमेरिकी प्रतिभा ने आख्यान ने रूपबन्ध में भी स्वतन्त्रता प्राप्त की। इस प्रकार उत्तरी अमेरिका में राष्ट्र और उपन्यास का जन्म साथ-साथ हुआ। तब तक के अंग्रेजी 'नावेल' के रूपबन्ध में एक स्वतन्त्र राष्ट्र की उद्दाम आकांक्षाओं का अँटना संभव न था। नए राष्ट्र के एक नितांत नए उन्मुक्त रुपबन्ध का सृजन किया।

(i) (iii) भारतीय मानस
(ii) (iv) बंकिमचंद्र के उपन्यास
(iii)(i) दुर्गेशनंदिनी
(iv)(ii) परीक्षागुरु
(v) (iv) उपन्यास
(vi)(iii) रोमांस
(vii)(iii) I और III
(viii)(i) मोबी डिक
(ix)(iii) मृणालिनी
(x) (iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

3. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**
सोचिए
बताइए

आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है कैसा
यानी कैसा लगता है
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)
सोचिए
बताइए
थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे?)
आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे
इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का करते हैं?

(i) **(ग)** अपने कार्यक्रम को व्यावसायिक रूप से सफल बनाना
व्याख्या: अपने कार्यक्रम को व्यावसायिक रूप से सफल बनाना
(ii) **(ग)** मानवता के विरुद्ध
व्याख्या: मानवता के विरुद्ध
(iii) **(क)** क्रूरता का
व्याख्या: क्रूरता का
(iv) **(घ)** क्रूरता का
व्याख्या: क्रूरता का
(v) **(क)** विकल्प (i)
व्याख्या: अपंगता को दर्शाने और बताने का अवसर

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-
(i) **(ख)** संचार और जनसंचार के
व्याख्या: संचार और जनसंचार के
(ii) **(क)** इंटरनेट
व्याख्या: इंटरनेट की वजह से रिसर्च का काम और भी आसान हो गया है।
(iii) **(घ)** समसामयिक घटनाओं की जानकारी
व्याख्या: पत्रकारीय लेखन में सर्वाधिक महत्त्व समसामयिक घटनाओं की जानकारी पर है।
(iv) **(ग)** पूर्णकालिक
व्याख्या: पूर्णकालिक
(v) **(ग)** जनसंचार के माध्यमों में
व्याख्या: जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टीवी के माध्यम से दर्शकों और श्रोताओं के लिए विशेष लेखन किया जाता है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेत् निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए-
(i) **(ख)** पश्चिमी
व्याख्या: पश्चिमी
(ii) **(घ)** पाँच
व्याख्या: पाँच
(iii) **(ख)** क्योंकि उन्हें इसकी जानकारी नहीं थी।
व्याख्या: सुबह ऑफिस जाते समय यशोधर बाबू से घर के किसी सदस्य ने इस पार्टी के

आयोजन के बारे में चर्चा तक नहीं की और न ही किसी ने उनसे कुछ पूछा इसलिए उन्हें ये पार्टी अच्छी नहीं लगी।

(iv)**(ख)** शादी की रजत जयंती

व्याख्या: 'सिल्वर वेडिंग' का अर्थ है शादी की रजत जयंती अर्थात् शादी के पच्चीस साल पूरे हो जाने को सिल्वर वेडिंग कहते है।

(v) **(घ)** सौंदलगेलर

व्याख्या: सौंदलगेलर

(vi)**(क)** कविता गाने के लिए

व्याख्या: पाठ के अनुसार लेखक खेतों में अकेले रहकर काम करना चाहता था, ताकि वो अकेले में बिना किसी रुकावट के कविताओं को गा सके और उन पर नाच सके।

(vii)**(घ)** गुड़ ज्यादा निकलता है

व्याख्या: गुड़ ज्यादा निकलता है

(viii)**(क)** याजक नरेश

व्याख्या: **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर दाढ़ी वाली मूर्ति का नाम याजक नरेश रखा गया है।

(ix)**(ग)** वे शहर के खुद विकसने का अवकाश नहीं छोड़ती

व्याख्या: लेखक ने वर्तमान सेक्टर मार्का कॉलोनियों के रहन-सहन को नीरस बताया है, क्योंकि वे शहर के खुद विकसित होने का अवकाश नहीं छोड़ती।

(x) **(ग)** 85 हजार

व्याख्या: मुअनजो-दड़ो की आबादी लगभग 85 हजार थी।

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

इसी प्रकार स्वतंत्रता पर भी क्या कोई आपत्ति हो सकती है? गमनागमन की स्वाधीनता, जीवन तथा शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता के अर्थों में शायद ही कोई 'स्वतंत्रता' का विरोध करे। इसी प्रकार संपत्ति के अधिकार, जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक औज़ार व सामग्री रखने के अधिकार, जिससे शरीर को स्वस्थ रखा जा सके, के अर्थ में भी 'स्वतंत्रता' पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती। तो फिर मनुष्य की शक्ति के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं प्रदान की जाए?

जाति-प्रथा के पोषक, जीवन, शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य के सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे, क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है, तो उसका अर्थ उसे 'दासता' में जकड़कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानून पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है, जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

(i) **(घ)** स्वाधीनता के साथ जीना

व्याख्या: स्वाधीनता के साथ जीना

(ii) **(ग)** उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए

व्याख्या: उसे अपनी इच्छा से कार्य करने की स्वतंत्रता दी जाए

(iii)**(घ)** लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे

व्याख्या: लोकतांत्रिक मूल्य सुदृढ़ होंगे

(iv)**(ग)** कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

व्याख्या: कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) **(घ)** इनमें से कोई नहीं

व्याख्या: इनमें से कोई नहीं

खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) कहानी साहित्य की एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें जीवन के किसी एक अंग विशेष का मनोरंजन पूर्ण चित्रण किया जाता है। कहानी एक ऐसी साहित्यिक विधा है, जो अपने सीमित क्षेत्र में पूर्ण एवं स्वतंत्र है, प्रभावशाली है। प्रेमचंद ने कहानी की परिभाषा इस प्रकार दी है "कहानी एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी अंग किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य होता है। उसका चरित्र, शैली तथा कथा विन्यास सब उसी भाव को पुष्ट करते हैं।" अर्थात् किसी घटना पात्र या समस्या का क्रमबद्ध ब्योरा जिसमें परिवेश हो, वंद्वात्मकता हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिंदु हो, उसे कहानी कहा जा सकता है।

(ii) भारत में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरुआत 1993 के आस-पास हुई थी । वर्तमान में भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का दूसरा दौर चल रहा है । ऐसी विभिन्न साइट्स हैं जो आज इंटरनेट पर मौजूद हैं जैसे - ' टाइम्स ऑफ इंडिया ' , ' आउटलुक ' आदि । गंभीरता के साथ इंटरनेट पत्रकारिता करने में रीडिफ़ सबसे आगे है । भारत में वेबसाईट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय ' तहलका डॉटकॉम ' को जाता है ।

(iii)संवाददाताओं की रुचि और ज्ञान को ध्यान में रखते हुये उनके मध्य काम का जो बंटवारा किया जाता है, उसे ही बीट कहते हैं। जैसे एक संवाददाता की बीट अपराध है तब इसका अर्थ है कि उसका कार्यक्षेत्र अपने शहर या क्षेत्र में होने वाली आपराधिक गतिविधियों की रिपोर्टिंग करना है।

8. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लेख लिखिये:

(i) **महानगरों में आवास-समस्या**

मानव की तीन मूलभूत आवश्यकताएँ हैं-रोटी, कपड़ा और आवास। जिन देशों में इन तीनों आवश्यकताओं की पूर्ति सहज तरीके से हो जाती है, वे देश संपन्न हैं। अतः आवास मानव की प्रमुख जरूरतों में से एक है। यह मनुष्य को स्थायित्व प्रदान करता है। आज के जीवन में चाहे वह नगर हो, ग्राम हो या कस्बा हो, आवास की समस्या गंभीर होती जा रही है।गाँवों में आवास की समस्या उतनी भीषण नहीं है, जितनी महानगरों में है।

महानगरों में रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, सत्ता आदि का केंद्रीयकरण हो गया है, अत: वहाँ चारों दिशाओं से लोग बसने के लिए आ रहे हैं। इस कारण वहाँ आवास की समस्या विकट होती जा रही है। इस समस्या का मुख्य कारण सरकार की अदूरदर्शिता है। सरकार ने देश के समग्र विकास की नीति नहीं बनाई। सरकार ने देश के चंद क्षेत्रों में बड़े उद्योग-धंधों को प्रोत्साहन दिया। इन उद्योग-धंधों के साथ बड़ी संख्या में सहायक इकाइयाँ लगीं। सरकार ने इन सहायक इकाइयों को अन्य क्षेत्रों में स्थापित करने में कोई सहयोग नहीं दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि बड़ी संख्या में लोगों का केंद्रण एक जगह ही हो गया। इस कारण बने

महानगरों में आवास की समस्या उत्पन्न हो गई। दूसरे, सरकार ने ऐसे क्षेत्रों में आवास संबंधी कोई स्पष्ट नीति भी नहीं बनाई।इसके समाधान के लिए सभी जगहों पर रोजगार और अन्य दैनिक आवश्यकताओं की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि महानगरों में इन सब के लिए मारामारी ना हो।

(ii) **शिक्षा और व्यवसाय**

शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर-ज्ञान या पूर्व जानकारी की पुनरावृत्ति नहीं है। इसका अर्थ कार्य या व्यवसाय दिलाना भी नहीं है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ है-व्यक्ति को अक्षर-ज्ञान कराकर उसमें अच्छे-बुरे में अंतर करने का विवेक उत्पन्न करना। मनुष्य के सहज मानवीय गुणों व शक्तियों को उजागर करना शिक्षा का कार्य है , ताकि मनुष्य जीवन जीने की कला सीख सके। ऐसा कर पाने में समर्थ शिक्षा को ही सही अर्थों में शिक्षा कहा जा सकता है। शिक्षा प्राप्त करने के साथ मनुष्य को जीवन-निर्वाह के लिए कोई-न-कोई व्यवसाय या रोजगार करना पड़ता है।

शिक्षा व रोजगार का प्रत्यक्ष तौर पर भले ही कोई संबंध न हो, परंतु शिक्षा से व्यवसाय में बढ़ोतरी हो सकती है-इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है। आज के समय में शिक्षा का अर्थ व उद्देश्य यह लिया जाता है, कि डिग्रियाँ हासिल करने से कोई नौकरी या रोजगार अवश्य मिलेगा। इसी कारण से शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य से भटक चुकी है।अब वो समय नहीं रह गया है, जब डिग्रियों से रोजगार मिलता था।अनेक युवा अपनी डिग्रियों के साथ बेरोजगारी की आग में जल रहे हैं।

अगर सब जगहों पर शिक्षा का विकास हो, तो शहरों में भीड़ अधिक नहीं बढ़ेगी तथा प्रदूषण भी कम होगा। कुछ हद तक बेकारी की समस्या भी हल हो जाएगी। अतः इस दिशा में तेजी से व समस्त उपलब्ध साधनों से एकजुट होकर काम करना पड़ेगा ताकि आम शिक्षित वर्ग और शिक्षा-जगत में छाई निराशा दूर हो सके। यह सही है कि आज जीवन में शिक्षा को व्यवसाय का साधन समझा जाने लगा है, पर अब जो स्वरूप बन गया है, उसे सही ढंग से सजाने-सँवारने और उपयोगी बनाने में ही देश का वास्तविक हित है।शिक्षा को व्यवसाय से अलग करके ही कुछ बदलाव लाए जा सकते हैं।

(iii) **बेरोजगारी का दानव**

यहाँ जो समस्याएँ दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ी हैं, इनमें जनसंख्या-वृद्धि, महँगाई, बेरोजगारी आदि मुख्य हैं। इनमें से बेरोजगारी की समस्या ऐसी है जो देश के विकास में बाधक होने के साथ ही अनेक समस्याओं की जड़ बन गई है। किसी व्यक्ति के साथ बेरोजगारी की स्थिति तब उत्पन्न होती है, जब उसे उसकी योग्यता, क्षमता और कार्य-कुशलता के अनुरूप काम नहीं मिलता, जबकि वह काम करने के लिए तैयार रहता है। बेरोजगारी एक ऐसी समस्या है जो कई सारी कठिनाइयों और समस्याओं को अपने साथ लेकर आती है।

बेरोजगारी की समस्या शहर और गाँव दोनों ही जगहों पर पाई जाती है। नवीनतम आँकड़ों से पता चला है कि इस समय हमारे देश में ढाई करोड़ बेरोजगार हैं। इस संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। यद्यपि सरकार और उद्यमियों द्वारा इसे कम करने का प्रयास किया जाता है, पर यह प्रयास ऊँट के मुँह में जीरा साबित होता है। हमारे देश में विविध रूपों में बेरोज़गारी पाई जाती है। पहले वर्ग में वे बेरोजगार आते हैं जो पढ़-लिखकर शिक्षित और उच्च शिक्षित हैं। यह वर्ग मज़दूरी नहीं करना चाहता , क्योंकि ऐसा करने में उसकी शिक्षा आड़े आती है। एक वर्ग उन बेरोजगारों का भी है जो ना तो अधिक पढ़े-लिखे हैं और ना ही अधिक मजदूरी

कर सकते हैं। और एक वर्ग वे भी हैं जो मजदूरी करना चाहते हैं, पर वे भी हर दिन अपने लिए रोजगार नहीं ढूँढ पाते हैं।
स्कूली पाट्यक्रमों में श्रम की महिमा संबधी पाठ शामिल किया जाना चाहिए ताकि युवावर्ग श्रम के प्रति अच्छी सोच पैदा कर सके। इसके अलावा एक बार पुनः लघु एवं कुटीर उद्योग की स्थापना एवं उनके विकास के लिए उचित वातावरण बनाने को आवश्यकता है। किसानों को खाली समय में दुग्ध उत्पादन, मधुमक्खी पालन, जैसे कार्यों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस काम में सरकार के अलावा धनी लोगों को भी आगे आना चाहिए ताकि भारत बेरोजगार मुक्त बन सके और प्रगति के पथ पर चलते हुए विकास की नई ऊँचाइयाँ छू सके।

(iv) **मोबाइल फोन बिना सब सूना**

संचार के क्षेत्र में क्रांति लाने में विज्ञान-प्रदत्त कई उपकरणों का हाथ है, पर मोबाइल फोन की भूमिका सर्वाधिक है। मोबाइल फोन जिस तेजी से लोगों की पसंद बनकर उभरा है, उतनी तेजी से कोई अन्य संचार साधन नहीं। आज इसे अमीर-गरीब, युवा-प्रौढ़ हर एक की जेब में देखा जा सकता है। इसके प्रभाव से शायद ही कोई बचा हो। कभी विलासिता का साधन समझा जाने वाला मोबाइल फोन आज हर व्यक्ति की जरूरत बन गया है।
मोबाइल की ही देन है कि एक कॉल पर राज मिस्त्री, प्लंबर, कारपेंटर आदि उपस्थित हो जाते हैं। विद्यार्थी पुस्तकों का पीडिएफ या उपयोगी लेक्चर डाउनलोड करके समयानुसार पढ़ते-सुनते रहते हैं। इसमें लगे कैल्कुलेटर, कैलेंडर भी बड़े उपयोगी हैं, जिनका उपयोग समय-समय पर किया जा सकता है। साथ-साथ विशेष रूप से महिलाएँ एवं बुजुर्ग मोबाइल के साथ अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं; क्योंकि कोई भी परेशानी आने पर वे तत्काल अपने परिजनों से संपर्क कर सकते हैं।
जहाँ एक ओर इसका उपयोग जरूरी है, तो दूसरी तरफ इसके उपयोग से कई नुकसान भी हैं।और ऐसा कहना अनुचित नहीं है कि हम आज के दौर में मोबाइल फोन के गुलाम बन कर रह गए हैं। विद्यार्थीगण पढ़ने की बजाय फोन पर गाने सुनने, अश्लील फ़िल्में देखने, अनावश्यक बातें करने में व्यस्त रहते हैं। इससे उनकी पढ़ाई का स्तर गिर रहा है। मोबाइल फोन पर बातें करना हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इस पर ज्यादा बातें करना बहरेपन को न्यौता देना है। आतंकवादियों के हाथों इसका उपयोग गलत उद्देश्य के लिए किया जाता है। मोबाइल फोन नि:संदेह अत्यंत उपयोगी उपकरण और विज्ञान का चमत्कार है। इसका सदुपयोग और दुरुपयोग मनुष्य के हाथ में है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) **गाँवों में फैलता फैशन**

फैशन आजकल एक आम शब्द बन कर रह गया है, सभी को फैशन में रहना है चाहे वो गाँव से हो अथवा शहर से।किसी भी समाज में कोई भी नया फैशन सामान्यत: महानगरों से प्रारंभ होता है। उस फैशन का जैसे-जैसे प्रचलन बढ़ता जाता है, लोगों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित होता जाता है,और फिर वह फैलना शुरू हो जाता है छोटे से छोटे इलाके में भी। वास्तव में, फैशन का मूल उद्देश्य है-'सबसे अलग दिखना'। सबसे अलग दिखने की आकांक्षा या इच्छा ही लोगों को नए-नए फैशन अपनाने के लिए बाध्य करती है।
आज का समय दूरसंचार की क्रांति का समय है। जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के कारण एक बात कुछ ही सेकंड में एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँच जाती है। महानगरों में उत्पन्न फैशन भी शीघ्र ही विभिन्न गाँवों तक पहुँच जाता है। उन्हें अपनाने की होड़ शहरी लोगों की

तरह ग्रामीण लोगों में भी मच जाती हैं। विज्ञापन के माध्यम से लोगों को यह संदेश जाता है कि आधुनिक फैशन के बिना उन्हें आधुनिक एवं सभ्य नहीं समझा जाएगा। अतः स्वयं को सुंदर, आकर्षक एवं आधुनिक बनाने के लिए गाँव वाले भी शहरी लोगों की तरह फैशन के दीवाने बन जाते हैं।

यही कारण है कि आधुनिक पहनावे एवं तौर-तरीकों के बीच पारंपरिक पहनावे एवं तौर-तरीके गायब होते जा रहे हैं। घाघरा, पगड़ी, धोती जैसी चीजें लुप्त होती जा रही हैं। आज मीडिया की अत्यधिक सक्रियता के कारण गाँव एवं शहर में कोई अंतर नहीं रहता। गाँव भी शहरी संस्कृति को ज़ोर-शोर से अपनाने के लिए व्याकुल है। शहर में विकसित कोई भी फैशन कुछ ही दिनों में ग्रामीण समाज में भी प्रचलित हो जाता है । लेकिन क्या यह बदलाव सार्थक है? इसका उत्तर तो समय ही देगा, लेकिन इतना अवश्य है कि पारंपरिक वेशभूषा को बनाए रखने की ज़िम्मेदारी काफी हद तक गाँवों की है। अतः इसका अवश्य ध्यान रखा जाना चाहिए।

(ii) **स्वच्छता अभियान**

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा महात्मा गाँधी की 145वीं जयंती के अवसर पर आरंभ किया गया 'स्वच्छ भारत अभियान' अब तक का सबसे बड़ा स्वच्छता अभियान है। गाँधीजी के 'क्विट इंडिया' आह्वान को पूरा करने वाला देश अब उनके 'क्लीन इंडिया' के आह्वान को पूरा करने निकल पड़ा है। वैसे ऐसा पहली बार नहीं है, जब स्वच्छता अभियान की बात चली हो।गाँधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय ही स्वच्छता अभियान की बात की थी, और उसे आगे भी बढ़ाया था। अब एक बार फिर से स्वच्छता अभियान को सार्थक बनाने के प्रयास जारी हैं।

अब वह समय आ गया है जब हम विश्व पटल पर देश की छवि एक स्वच्छ भारत की बनाएँ। जिस तरह साँपों एवं जादू के देश की छवि से हम काफी आगे बढ़ चुके हैं, उसी तरह अस्वच्छता हमारे लिए अतीत बन जाए। आज देश का प्रत्येक नागरिक भारत को स्वच्छ देखना चाहता है, लेकिन इसके लिए वैयक्तिक तौर पर सहयोग देने से अभी भी कई लोग हिचकिचा रहे हैं।

देश को स्वच्छ बनाना सिर्फ किसी सरकार या संगठन की जिम्मेदारी नहीं हो सकती, होनी संभव भी नहीं है। जब तक देश के नागरिक इसके प्रति जागरूक नहीं होंगे, तब तक इस महान लक्ष्य को प्राप्त करना संभव नहीं है। स्वच्छता की भावना हमारे अंदर होनी चाहिए। किसी भय या बल के प्रभाव में नहीं, बल्कि हमें स्वयं ही इसके प्रति आंतरिक स्तर पर सचेत होना होगा। न तो कोई गंदगी फैलाए और न ही किसी को गंदगी फैलाने दे। यही भावना स्वच्छता अभियान को सफल एवं सार्थक बना सकती है।

हमें स्वच्छता के महत्त्व को समझना होगा। इसके अभाव में यानी गंदगी से होने वाले दुष्प्रभावों को जानना होगा। विश्व पटल पर बनी अपनी गंदगी की छवि को मिटाकर अपनी स्वच्छता-प्रिय छवि को स्थापित करना होगा।

(iii) **वन रहेंगे : हम रहेंगे**

वन संपदा भी प्रकृति की एक अद्‌भुत और अत्यंत उपयोगी देन है। वन तथा पेड़-पौधे पर्यावरण से कार्बन-डाइऑक्साइड सोख कर, उसे प्राणदायिनी ऑक्सीजन में बदलते हैं। वन बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं का कुप्रभाव कम करते हैं। मृदा अपरदन को रोकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते है कि वन पर्यावरण को संतुलित कर सभी जीवों के अस्तित्व की रक्षा करते हैं।

वनों से होने वाले लाभों के कारण मनुष्य ने उनकी अंधाधुंध कटाई की है, जिसके कारण

अनेक गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं।
यदि वृक्ष ही न रहे, तो संपूर्ण मानव जगत का अस्तित्व ही मिट जाएगा। यह भी सही है कि विकास के लिए वृक्ष काटना आवश्यक है। इसके लिए हमें वृक्षारोपण को अपना कर्तव्य समझ, इसका पालन करना चाहिए। इसके साथ ही हमें सतत पोषाणीय विकास की विचारधारा को अपनाना चाहिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) कवि के अनुसार उसने हमेशा अपने मन की बात मानी है। उसका कहना है कि उसने कभी अपने मन के प्रति लापरवाही नहीं की। उसने हमेशा वही किया जो उसके मन ने कहा। उसने कभी भी दुनिया की परवाह नहीं की। इस प्रकार वह केवल अपने मन का गान ही गाता है।

(ii) पंछी की उड़ान और कवि की कल्पना की उड़ान दोनों दूर तक जाती हैं। दोनों का लक्ष्य ऊँचाई मापना होता है। कविता में कवि की कल्पना की जो उड़ान है जिसकी सीमा अनन्त होती है, वह कल्पनाओं को पंख देकर अनंत ऊंचाइयों को छू सकता है इसीलिए कहा गया है - 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि'
जिस प्रकार फूल खिलकर अपनी सुगंध एवं सौंदर्य से लोगों को आकर्षित कर आनंद और जीवन देता है उसी प्रकार कविता भी सदैव खिली रहकर लोगों को भावों -विचारों का रसपान कराती है, पाठकों में नवीन स्फूर्ति एवं ऊर्जा का संचार करती है। दोनों का उद्देश्य एक समान अर्थात पाठकों एवं रसिको के हृदय को सुकून पहुँचाना होता है।

(iii)तुलसीदास जी ने समाज में व्याप्त आर्थिक विषमताओं का वर्णन करते हुए कहा है कि पेट भरने की समस्या से मजदूर, किसान, नौकर, भिखारी आदि सभी परेशान थे। अपनी भूख मिटाने के लिए सभी अनैतिक,अधार्मिक कार्य कर रहे हैं। अपने पेट की भूख मिटाने के लिए लोग अपनी संतान तक को बेच रहे हैं। पेट भरने के लिए मनुष्य कोई भी पाप कर सकता है।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) कवि की भाषा तो उर्दू है, पर उन्होंने हिंदी व लोकभाषा का भी प्रयोग किया है। उनकी रचनाओं में हिंदी, उर्दू व लोकभाषा के मिश्रण के विलक्षण प्रयोग हैं ऐसी ही भाषा गाँधी जी हिंदुस्तानी के रूप में पल्लवित करना चाहते थे। ये विलक्षण प्रयोग हैं - लोका देना, घुटनियों कपड़े पिन्हाना, गेसुओं में कंघी करना, रूपवती मुखड़ा, नर्म दमक, जिदयाया बालक, रस की पुतली। माँ हाथ में आइना देकर बच्चे को बहला रही है-
देख आईने में चाँद उतर आया है।
चाँद की परछाई भी चाँद ही हैं।

(ii) 'पतंग' कविता कवि आलोक धन्वा की एक लंबी कविता का भाग है। भादों के बाद शरद ऋतु के आगमन से खुशनुमा वातावरण के साथ कवि ने इसमें बालसुलभ इच्छाओ और उमंगो का प्रभाव पूर्ण, सुंदर चित्रण किया गया है। इसमे बालसुलभ क्रियाकलापो एवं प्राकृतिक परिवर्तनो की अभिव्यक्ति हेतु दृश्य-श्रव्य जैसे सुंदर बिंबो का उपयोग किया गया है।
बच्चो की उमंगो का रंग-बिरंगा सपना है-पतंग। आकाश में उड़ती रंग-बिरंगी तितलियो जैसी पतंगें उन्हे आकर्षित करती है, बालमन अपने हाथो से उन्हें छूना चाहता है, उनके साथ उड़ना चाहता है। उनमें वे बच्चे शामिल हैं जो पतंग के पीछे दौड़ते हुये गिरकर बच जाते हैं

जिससे आगे जीवन मे वे सँभलना सीख जाते हैं।हर नई पतंग उनकी नई उमंगों का प्रतीक है।

(iii)कवि ने नए-नए उपमानों के द्वारा सूर्योदय का सुंदर वर्णन किया है। ये उपमान सूर्य के उदय होने में सहायक हैं। कवि ने इनका प्रयोग गतिशीलता के लिए किया है। सूर्योदय होते ही यह जादू टूट जाता है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) भक्तिन केवल बेटियों की माँ थी और उसकी सास एवं दोनों जिठानियाँ बेटों की माँ थीं। बेटियों की माँ होने के कारण भक्तिन को अपने ही परिवार में घृणा और उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था। उसकी जिठानियाँ सारा दिन इधर-उधर की बातें करती रहती थीं और घर के किसी भी काम में हाथ नहीं बँटाती थीं। वहीं दूसरी ओर भक्तिन एवं उसकी बेटियाँ घर का सारा काम जैसे गोबर उठाना, कंडे पाथना आदि करती थीं। इतना काम करने के बावजूद ये चने-बाजरे की घुघरी चबाती थीं, जबकि जिठानियाँ और उनके बेटे बड़े मौज से अपने भात पर सफेद राब रखकर गाढ़ा दूध डालकर खाते थे।

(ii) लेखक के अनुसार, पानी माँगने वाले लड़कों की टोली को लेकर समाज में अंधविश्वास फैला हुआ है। लेखक इस बात से दुःखी होता है कि जहाँ चारों ओर पानी की इतनी कमी है, वहीं लोग बड़ी कठिनाई से इकट्ठा किया हुआ पानी उन लड़कों पर फेंककर बर्बाद कर देते हैं। लेखक के अनुसार वास्तव में, उन्हें यह पानी अपने उपयोग के लिए रखना चाहिए। इसलिए लेखक अपनी बुद्धि के अनुसार यह बात मानने से मना कर देता है।

(iii)अमावस्या की काली ठंडी रात थी। रात में हैजे और मलेरिया से ग्रस्त गाँव एक भय से डरे हुए शिशु की भाँति थर-थर काँप रहा था। सियारों का रुदन और उल्लुओं की डरावनी आवाज़ें ही सन्नाटे को चीरकर रात को और भयानक बना रही थीं, अन्यथा बीमारों के रोने और कराहने की आवाज़ें तो उनके मुँह में ही दबकर रह जातीं और सुनाई ही नहीं देतीं। संध्या काल में किसी आने वाली आशंका की सूचना देने के लिए राख पर बैठे कुत्ते रोने लगते थे।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) बाजार को सार्थकता वे ही व्यक्ति दे सकते हैं, जो यह जानते हैं कि वे क्या चाहते हैं तथा उन्हें बाजार में से अपने लिए कौन-सी आवश्यक वस्तु लेनी है।
ऐसे व्यक्ति केवल अपनी आवश्यकता की ही वस्तुएँ बाज़ार से खरीदते हैं। बाज़ार की सार्थकता इसी में है कि वह केवल लोगों की आवश्यकता की पूर्ति करे। समझदार ग्राहक ही बाजार को सार्थकता दे पाते हैं।

(ii) बाज़ार जाते समय हमें तार्किक एवं बौद्धिक दृष्टिकोण रखना चाहिए, अन्यथा अनावश्यक वस्तुओं की खरीदारी की आशंका रहती है।
इसके लिए हमें निम्न बिंदुओं पर ध्यान देना चाहिए

i. बाज़ार जाते समय पर्चेज़िंग पावर के प्रति सतर्क रहना चाहिए। प्रायः पैसे की गर्मी के कारण हम अनावश्यक वस्तुओं की खरीदारी कर लेते हैं ।
ii. कई बार बाज़ार का आकर्षक रूप भी हमें अनावश्यक वस्तुओं की खरीदारी के लिए उत्तेजित करता है। अतः हमें सतर्क रहना चाहिए।
iii. बाज़ार जाते समय कभी भी मन को खाली नहीं रखना चाहिए।

(iii)लेखक फूल तथा पेड़ का संकेत करता हुआ कहता है कि इन्हें हमें समाप्त नहीं मान लेना चाहिए। मात्र इनसे सब कुछ नहीं है। जिस प्रकार से पेड़ एक फूल को जन्म देता है, फूल एक बीज को जन्म देता है, वैसे ही जीवन में सब क्रमपूर्वक चलता रहता है। इसका कारण है कि फिर एक बीज से एक पेड़ का जन्म होता है और पेड़ से एक फूल का जन्म होता है। यह क्रम सदियों से चलता रहा है। यह तो मात्र संकेत है, जीवन रूकता नहीं सदैव चलायमान एवं गतिशील रहता है। जिसे समझकर हमें आगे बढ़ना चाहिए।